- श्री दुर्गा चालीसा -

नमो नमो दुर्गे सुख करनी ! नमो नमो अम्बे दू:ख हरनी !!

निराकार है ज्योति तुम्हारी ! तिहूँ लोक फैली उजियारी !!

शशि ललाट मुख महाविशाला ! नेत्र लाल भृकुटी विकराला !!

रूप मातु को अधिक सुहावे ! दरश करत जन सुख पावे !!

तुम संसार शक्ति लय कीना ! पालन हेतु अन्न धन दीना !!

अन्नपूर्णा हुई जग पाला ! तुम ही आदि सुन्दरी बाला !!

प्रलय काल सब नासन हारी ! तुम गौरी शिव शंकर प्यारी !!

शिव योगी तुम्हारे गुण गावैं ! ब्रम्हा विष्णु तुम्हें नित्य ध्यावें !!

रूप सरस्वती को तुम धारा ! दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा !!

धरा रूप नरसिंह को अम्बा ! परगट भाई फाड़ कर खम्बा !!

रक्षा करि प्रहलाद बचायो ! हिरनाकुश को स्वर्ग पठायो !!

लक्ष्मी रूप धरो जग माही ! श्री नारायण अंग समाही !!

क्षीरसिन्धु में करत विलासा ! दयासिन्धु दीजै मन आसा !!

हिंगलाज में तुम्ही भवानी ! महिमा अमित नहीं जात बखानी !!

मातंगी धूमावती माता ! भुवनेश्वरी बागला सुखदाता !!

श्री भैरव तारा जग तारिणि ! क्षिन्न लाल भव दुःख निवारिणी !!

केहरि वाहन सोह भवानी ! लांगुर वीर चलत अगवानी !!

कर में खप्पर खड्ग विराजै ! जाको देख काल डर भाजै !!

सोहे अस्त्र और त्रिसूला ! जाते उठत शत्रु हिय शूला !!

नगरकोटि में तुम्हीं विराजत ! तिहूँ लोक में डंका बाजत !!

शुम्भ निशुम्भ दानव तुम मारे ! रक्तबीज शंखन संहारे !!

महिषासुर नृप अति अभिमानी ! जेहि अघ भार मही अकुलानी !!

रुप कराल काली को धारा ! सेन सहित तुम तिहि संहारा !!

परी गाढ़ सन्तन पर जब जब ! भई सहाय मातु तुम तब तब !!

अमरपुरी औरों सब लोका ! तब महिमा सब रहे अशोका !!
ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी ! तुम्हें सदा पूजैं नर नारी !!
प्रेम भक्ति से जो यश गावै ! दुःख दारिद्र निकट नहीं आवे !!
ध्यावे तुम्हें जो नर मन लाई ! जन्म-मरण ताको छुटि जाई !!
जोगी सुर मुनि कहत पुकारी ! योग न हो बिन शक्ति तुम्हारी !!
शंकर आचारज तप कीनो ! काम क्रोध जीति सब लीनो !!
निशि दिन ध्यान धरो शंकर को ! काहू काल नहि सुमिरो तुमको !!
शक्ति रुप को मरम न पायो । शक्ति गई तब मन पछितायो !!
शरणागत हुई कीर्ति बखानी ! जै जै जै जगदम्ब भवानी !!
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा ! दई शक्ति नहि कीन विलंबा !!
मोको मातु कष्ट अति घेरो ! तुम बिन कौन हरै दुःख मेरो !!
आशा तृष्णा निपट सतावैं ! मोह मदादिक सब विनशावै !!
शत्रु नाश कीजै महारानी ! सुमिरों इकचित तुम्हें भवानी !!
करो कृपा हे मातु दयाला ! ऋद्धि सिद्धि दे करहु निहाला !!
जब लगि जियौं दया फल पाऊँ ! तुम्हरो जस मैं सदा सुनाऊँ !!
दुर्गा चालीसा जो कोई गावै ! सब सुख भोग परम पद पावै !!
देवीदास शरण निज जानी ! करहु कृपा जगदम्बा भवानी !!